International Journal of Information Movement Vol.2 Issue X February 2018)
Website: www.ijim.in ISSN: 2456-0553 (online) Pages 130-133

श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती की समाज को देन

कल्पना
शोधार्थी
टीचिंग अस्सिस्टेंट
हिंदी विभाग, भगत फूल सिंह महिला विश्वद्यालय,
खानपुर कलां सोनीपत।
Email:- ksnrw16@gmail.com

1.0 स्वामी ब्रह्मानन्द : जीवनी (जीवन वृत्त)

वेदमन्त्रों से गुंजित, पावन यज्ञधूमों से धूसरित, सरस्वती जै सो पवित्र नदियों से सिक्त, महाभारत की साक्षी, गीता की गाथिया, सूरदासगरीबदास सन्त घीसा, नितानन्द, निश्चलदास जैसे सन्तों की कर्मस्थली, बाणभट्टहर्षवर्धन सरीखे शारदापुत्रों की धात्री, गौड़पाद, वाबा तोतापुरी, स्वामी परमहंस और स्वामी विवेकानन्द जैसे वेदान्ताचार्यों एवं मनीषियों के चरणों की धूलि ने जिस गौरव को बढ़ाया, स्वामी दयानन्द जैसे युगप्रवर्तकों ने जिस के गौरव की पुनः प्रतिष्ठा स्थापित की, वेदवेदान्त परम्परा जैसी अमृतसिक्त किलो लिनी की उगम गिरि- श्रृंखला, यह हरियाणा की पावन धरती है, जिसे सदैव अपनी अजस्र साँस्कृतिक थाती पर गर्व रहा है। अन्धकार युग के सूर्य स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती भी इन्हीं ऋषिमुनियों की धमंधरा की गोदी में चह-महके और विश्व को प्रकाश दिखा करइसी की पवित्र माटी में पंचभूतों को त्याग ब्रह्मसात हो गये।

भारतीय मनीषा कुरुक्षेत्र को ही सृष्टि के विकासक्रम का आद्यस्थलब्रह्मा की तपोभूमि मानती है। ब्रह्मा ने विकासक्रम निर्माण के अन्वेषण की इसी स्थान पर साधना की थी। वेद-संहिता, शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद आदि से लेकर स्मृति, इतिहास पुराणकुरुक्षेत्र की महिमागान से महिमान्वित हैं।

इसी देवभूमि के पश्मिाचल में कुरुक्षेत्रपूण्डरी मार्ग पर एक ग्राम है—फरल, बहाँ पर कभी कुरुक्षेत्र भूमि के सात वनों काम्यक, अदिति, व्यासफल्कि, सूर्य,मधु शीतवन में से फल्किवन और मधुवन थे। यही फल्किवन किसी समय में चूहड़ ऋषि की तपोभूमि रहा है, जिस के नाम पर ग्राम का नाम पड़ा-चूहड़ माजरा। चूहड़ ऋषि की इसी पवित्र भूमि को एक बार फिर ब्रह्मात्मा स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने पावनता से सराबोर किया।

2.0 जन्म:

पूज्यपाद जगद्गुरु स्वामी ब्रह्मानन्द जी का जन्म कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि ग्राम चूहड़ माजरा में रोड़ क्षत्रिय वंश में 24 दिसम्बर सन् 1908 ई० तद्नुसार पौष सुदी प्रतिपदा विक्रमी सम्वत् 1965 वृहस्पतिवार को हुआ था। इनकी माता जी का नाम श्रीमती रामीदेवी तथा पिता जी का नाम चोरों बदामा राम या तथा इनके दादा जी का नाम चौ० शेरू राम था। माता पिता ने इनका नाम छोटूराम रखा था।

ये पांच भाई थे, जिन के नाम क्रमशः ये थे- श्री भूलासिंहश्री गणपत रायश्री फूलसिहश्री छोटाराम तथा श्री शिब्बाराम श्री भूलाराम और गणपत राय बचपन में ही दिवंगत हो गये थे। स्वामी जी की माता अत्यन्त दयालु, नम्र स्वभाव और शूरवीर एवं निर्धक नारी थी। उनकी शूरवीरता की आज भी अनेक कथाएं प्रचलित हैं। इन के पिता जी एक वीर योद्धा एवं विशाल हृदय व्यक्ति थे। उनकी दृष्टि में हिन्दू-मुसलमान दोनों ही समान , इनका व्यवहार दोनों के लिए समान था। उनमें मजहब की कोई बू नहीं थी, इसी लिए मुसलमान लोग भी इनका पूरा सम्मान करते थे और इनके यहाँ आते जाते थे। छोटाराम भी अपने माता-पिता के

पवित्र सद्गुणों को अंगीकार करते हुए माननीय एवं वन्दनीय महात्मा बने । जिन्होंने भोग और योग में ते योग को ही अपनाया और स्वयं बन्धन मुक्त होकर संसार के दन्न मुक्त होने का मार्ग प्रशस्त किया

3.0 गृह त्याग एवं शिक्षा:

छोटाराम के गृह त्याग का बिशेष कारण था कि छोटी' आयु -मे इनके माता-पिता का देहान्त हो गया था । उस समय इनकी आयु 1 1 वर्ष" की थी ' मातृ-पितृ स्नेह से वंचित बालक जैसे-जैसे बड़ा होता गया वैसे-वैसे सांसारिक वैभव से उदासीन ३
होकर जन्म मृत्यु के रहस्य को समझने में खोया-खोया-सा रहने लगा । इस वीतराग महात्मा को वैराग्य हो गयाआँ कि एक दिन सब ने मर 'जाना है । यह शरीर नश्वर है और संसार असार है l ;

बचपन से हो छोटाराम बहुत" ही शान्त, धीर और तीक्ष्ण बुद्धि थे I नवयुवावस्था में ही उन में जो अभूतपूर्व प्रतिभा और असाधारण मेधा थी और जिस से सम्पूर्ण संसार चमत्कृत हुआ था, 'उसका उन्मेष बचपन से ही. विशेष रूप से दिखाई पडने लगा था । वहीं दुसरी तरफ वज्र से भी अधिक कठोर थे। स्वामी जी बड़े सत्यवादी, स्पष्टवादी एवं परोपकारी परायण प्रवृति के थे जनता पर जब भी कोई कष्ट आता तो वे दौडे-दौडे श्री चरणों में पहुंच जाते थे इसके बाद यथोचित कार्यवाही करके गुरु जी उनके सब कांटो का उन्यूलन कर देते थे l इस प्रकार स्वामी जी का सारा ही जीवनं ऐसी अनेक रहस्यपूर्ण धटनाओं एवं लीलाओं से परिपूर्ण या आप्लावित है जो सहसा ही मर्यादा पुरुपोत्तम भगवान रामचन्द्र तथा लीला पुरुषोत्तम श्रीकृष्ण जी की याद ताजा कर देता है I

विक्रमी संवत् 1977 में स्वामी जी गाँव मे प० शिवनारयण के सम्पर्क में आकर विद्या पढने के प्रति उत्सुक हुए और 12 वर्ष की आयु में पढने का संकल्प लेकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में आ गए । कुछ ही वर्षों में हिंदी का अच्छा तथा संस्कृत का सामान्य ज्ञान अर्जित करके हिंन्दी भाष्य ग्रन्थो को अच्छी तरह समझने लगे । कुरुक्षेत्र गुरुकुल में स्वामी जी ने वहाँ के लोगो की कथनी और करनी में अंतर के कारण वि० स० 1979 मे गुरुकुल को त्याग दिया I और ब्रह्मचर्य आदि के सम्बन्ध में वहां के आचार्य तथा पर्बंधक जो भाष्य बखानते थे, व्यवहारिक दृष्टि से उस पर अमल" नहीं करते थे स्वामी जी ने करते थे गुरुकुल में रहकर जो अध्ययन किया, उसका मुख्य उद्देश्य केवल पुस्तकीय ज्ञान नहीं था

4.0 गुरु दीक्षा:

स्वामी ब्रह्मानन्द जो में बचपन से ही वैराग्य. की भावना प्रबल रही है सत्य के साक्षात्कार हेतु उत्कंठा रही है । इसी सत्य की खोज में इन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया l समस्त भारत का भ्रमण किया, विभिन्न धर्मो एवं सम्प्रदत्यों के संतों-महात्माओं के सम्पर्क में रहे किंतु प्रत्येक को सीमाओं में बंधा पाया । स्वामी भीष्म (घरोंडा) महात्मा नित्यानन्द, उदासी साधु, अवधुत चेतनानंद तभा महन्त सुंदर पुरी डेरा बाता के सम्पर्क में भी रहे । स्वामी ब्रह्मानंद जी ने प्राय पंजाबद् उत्तरांखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि स्थानों का भ्रमण किया, परन्तु कही पर भी शान्ति नहीं मिली और न ही उस सत्य से साक्षात्कार हुआ जिसके अन्वेषण के लिए उन्होंने वैराग्य लिया
स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी नियमित जीवन के पक्षधर थे उनका कथन था कि किसी भी नियम को तोडने से अच्छा तो यह है कि नियम बनाया ही न जाए ! वे 'कथनी-करनी के साम्य पर बल देते थे स्वामी जी हरिद्वार में कमलदास की कुटिया में रही थे वहाँ नियम था की भोजन की पंक्ति में कोई लहुसन प्याज नहीं खा सकता परन्तु महात्मा लोग अपनी कुटिया में से चटनी बनाकर लाते और अपने. पास वालों को बांटते रहते थे । इन्हें महात्माओं का यह व्यवहार अच्छा न लगा। स्वामी जी एक दिन झोली भर प्याज़ लाये और भोजन पंक्ति में महात्माओं को बाँटने लगे। कुछ महात्माओं ने आपत्ति की प्रतिउत्तर में स्वामी जी ने उनको अच्छी प्रकार फटकारा स्वामी जी जहाँ भी कथनी-करनी में भेद देखते वहाँ एक क्षण नहीं ठहरते थे तत्क्षण वहाँ से प्रस्थान कर देते। यही कारण है कि वे एक स्थान पर स्थायी रूप से नहीं रह सके अपनी इसी प्रवृत्ति

के कारण वे किसी एक गुरु के पास नहीं ठहर सके वे जिस सत्य के अन्वेषण के लिए निकले थे किसी संत महात्मा की भक्ति एबं चिन्तन का विस्तार उस लक्ष्य तक नहीं पाया सभी की अपनी -अपनी सीमाएँ थी अत: स्वामी जी ने विभिन्न धर्मों के सन्त महात्माओं से सार को ग्रहण कर एक सहज मार्ग की स्थापना की ऐसे सरल मार्ग की जो अशिक्षित सामान्य जन के लिए सहज-सुलभ था जीओ और जीने दो उनका जीवन मन्त्र था

5.0 धर्म प्रचार एवं आश्रमों की स्थापना

भारतीय संस्कृति का विश्व में गौरव पूर्ण स्थान रहा है l 'वसुधैव कुटुम्बकम' हमारी भारतीय संस्कृति का मूल सार तत्व है । भारतवर्ष के कल्याण के लिए ही नहीं इस संस्कृति का जन्म समस्त ब्रह्माण्ड, ज़ड़-चेतन के कल्याण लिए हुआ था ।दुर्भाग्य से आज 'आर्य' शब्द सिमट कर रह गया वरन इस संस्कृति पर कभी कोई आक्षेप नहीं आ सकता था आर्य श्रेष्ठ पुरुष का नाम है, जिनमें मुसलमान, ईसाई, यहूदी, भारतीय यूरोपीय कोई भी हो सकते है संस्कृति के समान आर्य का भी धर्म ' जाति और देश स्का से कोई सम्बन्ध नही है । जिन व्यक्तियों में संस्कारों के फल -स्वरूप आध्यामिकता, सहिष्णुता, आदान-प्रदान की ' भावना, उदारता, दया, ' प्यार, ममता; मैत्री त्याग -तपस्या, लोक सेवा, आत्म- गौरव, धर्म कर्म, निष्ठा एव अहिंसा आदि श्रेष्ठ गुणों का समावेश है वे सभी आर्य हैं और उन सभी श्रेष्ठ पुरुषों की संस्कृति वदिक संस्कृति है डॉ० गुणपाल सांगवान ने इस वैदिक संस्कृति की सर्वहारा कहा हैं आधुनिक परिभाषा में वैदिक संस्कृति को सर्वहारा संस्कृति कहें तो अधिक उचित है। क्योंकि जिस संस्कृति का उद्देश्य 'सत्यं- शिवसुन्दरम' हो, जो नर से नारायण बनने को प्रेरित करे, उस संस्कृति को लौक-व्यापी नाम देना अनुचित नहीं । समस्त मानव को कल्याणकारी भावों से सिक्त करने वाली संस्कृति हैl

इस वैदिक संस्कृति या सर्वहारा संस्कृति का संस्कार एक दिन में नहीं हुआ अपितु हमारे ऋषि-मुनियो सन्त-महात्माओं, धार्मिक गुरुओं और समाज सुधारकों के सतत मनन-चिंतन, समयानुसार उसमें शोध-परिमार्जन के फलस्वरुप हुआ है स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती भी ऐसे ही सत्य पुरुष थे जिन्होंने मानव-धर्म का प्रचार जीवन पर्यंत किया I इन्होने लगभग समस्त भारतवर्ष का भ्रमण किया समस्त धार्मिक मतों-पन्थो के सार तत्वों का अपने विवेक द्वारा गहन चिन्तन- पर्यवेक्षण किया हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख ईसाई जैन-बोद्ध आदि मतों के नियमों सिद्धांतों को अपने जीवन में अपना कर देखा, तप किया उपवास किया ।

6.0 कृतित्व:

स्वामी ब्रह्मानंद जी के तीन ग्रंथ ब्रह्मानंद पचासा, ब्रहाविचार और निति विचार नाम से प्रकासित हुए है। ये पुस्तकें स्वामी जी की मौलिक रचनाएँ हैं ।

7.0 ब्रह्मानंद पचासा:

स्वामी ब्रह्मानंद जी की यह कृति अमर कृति है I इस कृति में वेद-वेदान्त दार्शनिक चिन्तन परम्परा का सारगर्मित संगुम्फ्न है । मूल पुस्तक अध्यायों मे विभाजित नहीं थी बाद में संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित मध्वाचार्य कौलं निवासी ने इस पुस्तक को "हमारा ध्वज, "ओंकार महिमा, "सद-उपदेश, गीता का तत्त्व अपने को पहचानो कर्म विवेचन, श्रद्धांजलि, अर्थशास्त्र का तत्त्व, तिथि नक्षत्र देवता विचार, योग दर्शन विचार, वेद-वेदांग एवं विचार, न्याय-दर्शन सार, उपनिषद तत्व मिलकर शुभ कर्म करो, मनुष्य सफलता कब पायेंगे, मैं कौन हूं, कर्मयोग का स्वरूप, ज्ञान के दोहे शुद्धि की आवश्यकता ब्रह्मानंद आराम, आज्ञा का है सारा खेल, ओमर्थ निरूपण, दर्शन प्रवेशिका तथा जय ध्वनि" शीर्षकों के अन्तर्गत वर्गीकृत किया है । इस. पुस्तक का सार गर्मित विवेचन आगे के अध्यायों में किया गया है । इस ग्रन्थ में वेद-उपनिषदों के सार को अत्यंत सरल सामान्य जन की भाषा में विवेचित किया गया है ।

8.0 ब्रह्म विचार:

स्वामी जी की यह पुस्तक देखने में लघु है, परन्तु इस में जिस विषय पर चिंतन किया गया हैं उसका विस्तार असीमित है Lब्रहा ऐसा बिषय है जिस पर आदि समय से ऋषि-मुनियों, मनीषियों, विद्वानों, दार्शनिकों एव संत महात्माओं ने चिन्तन मनन किया है और आज भी विश्व भर के विद्वान एवं दार्शनिक इस विषय पर लगे हुए हें किन्तु उसके रहस्य को बिरला ही पा सका है अद्वैत सम्प्रदाय में ब्रहा ही एक मात्र परम तत्त्व माना गया है। इस परम तत्त्व के स्वरूप के विषय में स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने ब्रह्मानन्द पचासा में अनेक स्थानों पर प्रकाश डाला है। स्वामी ब्रह्मानन्द जो ने इस पुस्तक में ब्रहा जगत और आत्मा जैसे सूक्ष्म गुह्यतम दार्शनिक विषयो को गुरु-शिष्य के माध्यम से प्रश्नौत्तर शैली में ऐसे सरल ढंग से समझाया है कि सामान्यजन के लिए भी बुद्धिग्राह्य हो गया है। उदाहरत: शिष्य प्रश्न करता है में कौन हूं क्या हूं कहाँ से आया हूं कहाँ जाना है गुरु इस प्रश्न का उत्तर देता है न तू आया न तू जावे भ्रम भरोटा सीस उठावे। अपना रूप तू आप देखले और कोई क्या बतलावे l इस पुस्तक के संबंध में पुस्तक विद्वान पं० विद्यानिधि शारुत्री जी का कथन है यह ग्रन्थ लंघुकाय होता हुआ भी जीवन-ग्रंथि को सुलझा ने में अलघु ही समझना चाहिए। इसमें प्रतिपादित संपन मनीषी ही इसके वाच्य लक्ष्य व्यंग्य सभी अर्थों के तात्पर्य को सम्यक समझने मैं समर्थ हो सकता है ब्रहा विचार इस नामकरण मे ही नाना गूढ अर्थ अन्तर्निहित है

9.0 निति विचार

हमारे प्राचीन साहित्य में नीति ग्रथों के सृजन की परम्परा रही है। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति के मूल में नैतिकतो का महत्त्व रहा है। शुक्रनिति विदुर नीति और चाणक्य नीति आदि ग्रथों का अत्यन्त व्यवहारिक महत्त्व रहा है चाणक्य नीति के आधार पर कायम मौर्य कालीनं शासन व्यवस्था भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। चाणक्य द्वारा रचितं पाँच सौ एकत्तर सूत्रों को स्वामी जी ने सामान्य जन की भाषा में सार रूप से इस पुस्तिका में प्रस्तुत किया है। स्वामी जी ने अन्तिम प्रकरण में लिखा है

" पांच सो एकत्तर सूत्र चाणक्य लिखे लहे आनन्द।
तेतीस प्रकरण भाषा के अन्दर लिखे गये ब्रह्मानन्द l I"

स्वामी जी ने इन पाँच सो एकत्तर सूत्रों को तेतीस प्रकरणों में वर्गीकृत किया है I प्रकरणों के नाम सूर्य, वरुण,विष्णु, भानु, आदित्य, यम, कश्यप, अत्री, भारद्वाज, वशिष्ठ, गौतम, *विश्वामित्र,जगद्री* आदि देवताओं एवं ऋषि मुनियों के नाम पर रखे गये हैं।

स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वतीं भी एक दिव्य मूर्ति थे। मेरी कलम में वह सामर्थ्य नहीं है कि उनके विस्तार को शब्दों में समेट सकू या लिपिबद्ध कर सकू। जो वे थे वैसे दृष्टव्यं नहीं थे और जो दृष्टव्यं थे वैसे वे नहीं थे। जिस प्रकार श्री कृष्ण जी श्रीमद भगवत गीता में अपने सम्बन्ध में बताते हैं कि वसे तो उनका कोई रूप कुरूप नहीं है और न ही वे वर्णनीय विषय ही हैं फिर भी वे अपने सम्बध में मुख्य मुख्य रूप में वर्णन करते हैं, उसी प्रकार मैंने भी स्वामी जो के वक्तितव को मुख्य मुख्य रूप में लिपिबद्ध करने का प्रयत्न किया है और अंत में लिखना ही पडा।

गीत भी तू संगीत भी तू है, लय और सुर तू गाणे म्हं "।
'रूप-कुरूप न कोई तेरा, सरल नहीं समझाणे म्हं '।।

10.0 संदर्भ-सूची:

1. वैध वनमाली दत्त शर्मा : हरियाणा की वेदांत परम्परा और बाबा तोता पुरी।
2. स्वामी जगदीशानंद : जगदूगुरु ब्रह्मानंद चरित--1 .
3. डॉ भीम सिंह : ज़गद्गुरु ब्रह्मानंद चरित--3 भूमिका से।
4. स्वामी जगदीशानन्द : जगदूगुरु ब्रह्मानंद चरित--2
5 . डॉ विध्यानिधी शास्त्री : श्री गुरु ब्रह्मानंद स्त्रोतम

6. डॉ गुणपाल सांगवान : हरियाणा लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन
7 . प० विध्यानिधी शास्त्री : भूमिका, ब्रह्म विचार